इत्तेहादे मिल्लत की ज़रूरत क्यों?

जनाब शकील हसन शमसी साहब "राष्ट्रीय सहारा" देहली
अनुवादः डॉ० आरिफ़ अब्बास

बचपन से जवानी तक मैंने लखनऊ की गलियों की ख़ाक छानी। ये एक ऐसा शहर है, जिसकी सक़ाफ़त, नफ़ासत, शराफ़त, नज़ाकत और ज़बान की लताफ़त सारी दुनिया में मशहूर है। यहाँ का शिया-सुन्नी फ़साद और हिन्दू-मुस्लिम इत्तेहाद भी बहुत मशहूर है। तक़रीबन 30 साल पहले मेरे एक अज़ीज़ पाकिस्तान से लखनऊ आए तो एक रेस्टोरेन्ट में हम अपने युनिवर्सिटी के दोस्तों के साथ बैठे थे। दिलचस्प बातें हो रही थीं। जब महफ़िल ख़त्म हो गई तो मेरे पाकिस्तानी अज़ीज़ ने कहा एक बात पूछूँ, क्या यहाँ के मुसलमान हिन्दुओं जैसे नाम रखने लगे हैं? मैंने हैरत से कहा कि क्यों? मेरे अज़ीज़ ने कहा कि तुम लोग जिस लड़के से बात कर रहे थे वह बातें तो बिल्कुल मुसलमानों जैसी कर रहा था, लेकिन नाम तुम लोग बार-बार अजय-अजय ले रहे थे। मैं उनकी परेशानी समझ गया, मैंने कहा कि अरे भाई वह मेरा दोस्त हिन्दू ही है और वह गढ़वाल का रहने वाला है, लेकिन पुराने लखनऊ में रहने की वजह से उसकी बातचीत, रहन-सहन और अन्दाज़े गुफ़्तगू ऐसा हो गया है कि पहचानना मुश्किल है। कई बार शिया-सुन्नी फ़साद के दौरान उसकी जान के लाले पड़ गए, क्योंकि बलवाई उसको भी मुसलमान समझ रहे थे लेकिन जब ये राज़ खुला कि वह मुसलमान नहीं है तो उसकी जान बची। इस पर मेरे पाकिस्तानी अज़ीज़ ने कहा कि जब ये अन्दाज़ा लगाना मुश्किल होता है कि कौन हिन्दू है और कौन मुसलमान, तो फिर यहाँ के लोग ये कैसे समझ जाते हैं कि कौन शिया है और कौन सुन्नी? इस पर मैंने कहा कि लखनऊ एक ऐसा बदनसीब शहर है, जहाँ शिया और सुन्नी मोहल्ले बटे हुए हैं। शिया मोहल्लों से जो चौड़ा होकर गुज़रे वह शिया, जो सुन्नी मोहल्लों से बेख़ौफ़ गुज़रे वह सुन्नी, यही चेहरों का ख़ौफ़ पहचान है। मुहर्रम में काली शर्ट पहन कर पाटानाला, बिल्लोचपुरा और पुल गुलाम हुसैन से गुज़रना दुश्वार है तो लाल पीले कपड़े पहन कर कशमीरी मोहल्ला, रुस्तम नगर और मुफ़्तीगंज से गुज़रना दुश्वार है। लखनऊ में शिया-सुन्नी एक दूसरें को शिया सुन्नी भी नहीं कहते थे, बल्कि खटमल मच्छर कह कर मुख़ातब करते थे। मुझे नहीं मालूम कि ये नाम किसने रखा और क्यों पड़ा, लेकिन दिलचस्प बात ये है कि कोई फ़िरक़ा अपने आपको इस नाम से मुख़ातब किये जाने पर नाराज़ भी नहीं होता था। ख़ैर बरसों बाद जब मैं 2003 में फिर पाकिस्तान गया तो अपने उसी अज़ीज़ के साथ कराची में घूम रहा था, उसने बड़े फ़ख़्र से कहा कि हमारे यहाँ लखनऊ की तरह शिया-सुन्नी वाले मोहल्ले नहीं, यहाँ सब मुसलमान रहते हैं। अभी हम कुछ ही दूर आगे चले थे कि उस इलाक़े की सक़ाफ़त कुछ अलग ही नज़र आने लगी। लम्बे, चौड़े और ऊँचे क़द के नौजवान दिखाई देने लगे, ज़बान और लिबास में भी काफ़ी फ़र्क़ लगा। मैंने पूछा कि ये कौन सा इलाक़ा है, तो मेरे अज़ीज़ ने कहा कि ये सोहराब कोट का इलाक़ा है, जहाँ पठान आबाद हैं। मेरे अज़ीज़ ने कहा ये बहुत ख़तरनाक इलाक़ा है, ज़रा सी देर में यहाँ बम फटने लगते हैं। ये सड़क मुहाजिरों और पठानों के दरमियान लड़ाइयों का

मरकज़ रही है। मैंने कहा कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, यहाँ तास्सुब शिया-सुन्नी की शक्ल में न सही तो मुहाजिरों और पठानों के दरमियान मौजूद है, फिर मैं हर साल पाकिस्तान जाने लगा और हर साल वहाँ का माहौल बदलते हुए देखा, अब तो वहाँ भी शियों और सुन्नियों की बस्तियाँ और कालोनियाँ अलग-अलग बस रही हैं। इतना ही नहीं देवबन्दी और हनफ़ी हज़रात भी एक दूसरे से दूर रहने को ही तरजीह दे रहे हैं। इसके अलावा सारे पाकिस्तान के लोग पठानों से दूर रहना चाहते हैं, क्योंकि उनको ये डर लगा रहता है कि शायद इनमें से कोई तहरीके तालिबान, पाकिस्तान का मेम्बर न हो। इस साल मैं पाकिस्तान नहीं गया, लेकिन सुना है कि वहाँ शियों, हनफ़ियों और वहाबियों को टार्गेट किलिंग के ज़रिए मारा जा रहा है ताकि शहर में कोई बड़ा फ़साद हो सके। खुदा का शुक्र है कि हिन्दुस्तान के हालात बहुत बेहतर हैं, लेकिन ऐसा नहीं कि यहाँ के हालात को ख़राब करने की कोशिश नहीं हो रही है। लखनऊ का एक फ़सादी गिरोह लगातार किसी न किसी बात पर शिया-सुन्नी मसले को हवा देने की कोशिश कर रहा है। कुछ छोटे-छोटे अख़बार भी किसी ख़ास गिरोह के इशारे पर शिया और सुन्नियों के दरमियान कड़वाहटें बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

दूसरी तरफ यू०पी० के मशहूर शहर रामपुर के एक क़सबे में मुसलमानों के दो मसालिक के दरमियान चल रही कशीदगी को कुछ लोगों ने इस क़दर हवा दी कि वहाँ फ़साद की नौबत आ गई और मक़ामी इन्तिज़ामिया को इसमें मदाख़लत पर मजबूर होना पड़ा। वहाँ नमाज़ की इमामत को लेकर हनफ़ी और देवबन्दी मसालिक के लोग एक दूसरे के सामने आ गए थे। मैं इस वाक़िए की तफ़सील में नहीं जाना चाहता कि कौन हक़ पर है और ज़्यादती कर रहा है, इस पर भी बात नहीं करना चाहता, क्योंकि इस से मसले का हल नहीं होगा, बल्कि बिगड़ जायेगा। मुझे तो अरबाबे करम की तवज्जोह इस तरफ दिलाना है कि ऐसे दौर में जब कि हर तरफ़ से इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशें हो रही हैं, इस्लाम को बदनाम करने की भरपूर मुहिम चल रही है, दहशतगर्दी की आड़ में मुसलमानों ही को क़त्ल किया जा रहा है, मुसलमानों के सर ही दहशतगर्दी का ठीकरा फोड़ा जा रहा है और बेगुनाह मुसलमानों को ही जेलों में ठूँसा जा रहा है। ऐसे माहौल में कौन हस्सास मुसलमान ऐसा होगा, जो मसलक या गिरोह की बात करेगा? मैं तो समझता हूँ कि इस वक़्त मसलक की बात करने वाले लोग जाने अन्जाने में उन ताक़तों की मदद कर रहे हैं, जो इस्लाम के ख़िलाफ़ साज़िशें करने में मसरूफ़ हैं।

सवात के लोगों पर मसलक परस्ती का भूत आज से नहीं काफ़ी अरसे से सवार है और इसके ख़त्म होने के आसार भी नज़र नहीं आते, क्योंकि मुसलमानों के किसी गिरोह की जानिब से कोई संजीदा कोशिश इस मामले को ख़त्म करने के लिए नहीं की जा रही है। शायद हमारी समाजी और मज़हबी तनज़ीमें इस इन्तिज़ार में हैं कि वहाँ कोई बड़ा फ़साद हो जाए तो मुदाख़ेलत करें। कुछ लोगों का ये भी कहना है कि ये मामला बिल्कुल मक़ामी नौइयत का है, इसलिए इसको वहीं तक महदूद रखना चाहिए, लेकिन मेरा कहना ये है कि आज जो मामला मक़ामी लग रहा है, कल वह एक बड़ी आग की शक्ल भी इख़्तियार कर सकता है, क्योंकि इस्लाम दुश्मन ताक़तें कोई भी ऐसा मौक़ा अपने हाथ से जाने देना नहीं चाहतीं, जिससे कि मुसलमानों का शीराज़ा मुन्तशिर किया जा सके, इसलिए हम सब की कोशिश यही होना चाहिए कि फ़ितनों का सद्दबाब करने के लिए मुत्तहिद होकर निकल पड़ें। वैसे काफ़ी लोग ऐसे हैं, जो मुसलमानों में इत्तेहादो इत्तेफ़ाक़ बढ़ाने की कोशिश में लगे हुए हैं। मेरे एक दोस्त जनाब सिराज महदी भी उन ही मुसलमानों में से एक हैं, जो इत्तेहादे मिल्लत के लिए बराबर कोशिश कर रहे हैं। मैं उनके ज़रिये मुनअक़िद किये जाने वाले दो जलसों में शरीक हुआ और उन दोनों जलसों में शरीक होने वालों को बहुत मुख़लिस पाया है। इसी कन्वेन्शन की वजह से एक ज़बरदस्त तबदीली ये आई कि उलमा-ए-फ़िरंगमहल और उलमा-ए-ख़ानदाने इज्तेहाद जो हालात की सितम ज़रीफ़ी के सबब एक दूसरे से दूर हो गए थ वह एक ही स्टेज पर नज़र आए

शायद कुछ लोगों को मालूम न हो कि लखनऊ के यही दो घराने सदियों तक लखनऊ में शिया-सुन्नी इत्तेहाद की मशाल जलाए रहे और दोनों के दरमियान गहरे इल्मी ताल्लुक़ात रहे। इत्तेहादे मिल्लत कन्वेन्शन में सिर्फ़ शिया-सुन्नी फ़िरक़ों के लोग ही शामिल नहीं हुए बल्कि सलफ़ी, हनफ़ी और ख़ानक़ाही हज़रात की शुमूलियत ने भी ये साबित किया कि मुसलमान एक दूसरे के क़रीब आने को बेक़रार हैं।

पिछले महीने भोपाल में मुनअक़िद होने वाली इत्तेहादे मिल्लत कान्फ्रेंस के दौरान सबसे अहम चीज़ ये देखने में आई कि उलमा की एक बड़ी तादाद ने इत्तेहादे इस्लामी को फ़रोग़ देने में रोज़नामा ''राष्ट्रीय सहारा'' के ग्रुप एडिटर जनाब अज़ीज़ बर्नी की कोशिशों को इतना सराहा कि थोड़ी देर को ये लगने लगा कि जलसा इत्तेहादे मिल्लत का न होकर बर्नी साहब को एज़ाज़ देने के लिए मुनअक़िद किया गया है, शायद इसकी वजह यही थी कि रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा ने मुसलमानों के मुश्तरका मसाएल को दुनिया के सामने इस तरह पेश किया है कि किसी को कहीं कोई चीज़ भी इख़्तेलाफ़ी नज़र नहीं आई। इत्तेहादे मिल्लत कन्वेन्शन में वैसे तो बहुत सी अहम तजावीज़ आईं, लेकिन सबसे अहम तजवीज़ ये थी कि मुसलमानों के तमाम फ़िरक़े एक दूसरे के ख़िलाफ़ कुफ़्र के फ़तवे देने का सिलसिला बन्द करें।

मैंने भी कुछ तजावीज़ इस जलसे में रखी थीं, जो जलसे ने इत्तेफ़ाक़े राय से पास की थीं, उसमें एक तजवीज़ ये थी कि जिन मुसलमानों को दहशतगर्दी के इल्ज़ाम में पकड़ा जाता है, उनके साथ बातचीत करने के लिए एक क़ानून सेल बनाया जाना चाहिए जो जेलों में बन्द उन तमाम लोगों के इण्टरव्यु करे, जिनको पुलिस ने दहशतगर्दी के इल्ज़ाम में बन्द किया है और उनसे इल्ज़ामों की हक़ीक़त मालूम की जाए और अगर वह बेगुनाह हैं तो उनकी पैरवी की जाए। मैंने कहा था कि जिस तरह मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड शरीअत पर होने वाले हमलों का मुक़ाबला कर रहा है, उसी तरह एक लीगल सेल ऐसा बनाया जाना चाहिए जो क्रिमनल लॉ के ग़लत इस्तेमाल (Misuse) का मुक़ाबला करे और परेशान किये जा रहे मुसलमानों की क़ानूनी मदद करे। कोलकाता की जेल में बन्द अब्दुल्लाह की जो दिल दहला देने वाली दास्तान रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा के ज़रिये क़ारेईन तक पहुँची है, वैसी न जाने कितनी ही कहानियाँ अभी जेल की सलाख़ों के पीछे क़ैद होंगी। कितने तो ऐसे होंगे जिनको अपनी दास्तान बयान करने के लिए क़लम और काग़ज़ भी नहीं मिल रहा होगा, इस लिए इत्तेहादे मिल्लत के बैनर तले या मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की तर्ज़ पर क्रिमनल लॉ के ग़लत इस्तेमाल के ख़िलाफ़ एक इदारा बनाकर हम मुसलमानों के एक बड़े तबक़े की मदद कर सकते है।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा उर्दू 30 जून 2010ई०)